॥ मंत्राधिराज ॥

सुख शान्ति हेतु प्रतिदिन जाप करें

।। महामन्त्र ।।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं,
णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

षोडशाक्षरी महाविद्या पंचपदों और पंचगुरूओं के नामों से उत्पन्न हैं, इसका ध्यान करने से सभी प्रकार के अभ्युदयों की प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति एकाग्र मन होकर इस सोलह अक्षर के मन्त्र का ध्यान करता है, उसे चतुर्थ तप एक उपवास का फल प्राप्त होता है।

सोलह अक्षर का मन्त्र	:-	अरिहंत-सिद्ध-आइरिय-उवज्झाय-साहू अथवा अर्ह-त्सिद्धाचार्यउपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः।
छह अक्षर का मंत्र	:-	अरिहंतसिद्ध, अरिहंत सि सा, ॐ नमः सिद्धेभ्यः नमोऽर्हत्सिद्धेभ्यः।
पाँच अक्षर का मंत्र	:-	अ सि आ उ सा । णमो सिद्धाणं ।
चार अक्षर का मंत्र	:-	अरिहंत । अ सि साहू ।
सात अक्षर का मंत्र	:-	ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः ।
आठ अक्षर का मंत्र	:-	ॐ णमो अरिहंताणं।
तेरह अक्षर का मंत्र	:-	ॐ अर्हत् सिद्धसयोगकेवली स्वाहा।
दो अक्षर का मंत्र	:-	ॐ ह्रीं । सिद्ध । अ सि ।
एक अक्षर का मंत्र	:-	ॐ, ओं, ओम अ, सि ।

॥ मनवांछित शुभ कामनाओं की सिद्धि हेतु ॥

1. रविवार को	॥ ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ॥
2. सोमवार को	॥ ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः ॥
3. मंगलवार को	॥ ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः ॥
4. बुधवार को	॥ ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः ॥
5. गुरूवार को	॥ ॐ ह्रीं श्री सुरगुरू दोषनिवारणाय अष्ट जिनेन्द्राय नमः ॥
6. शुक्रवार को	॥ ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः ॥
7. शनिवार को	॥ ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः ॥

रवि व्रत पार्श्वनाथ का मन्त्र

ॐ नमों भगवते पारसनाथ जिनेन्द्राय धरणेन्द्र पदमावती सहिताय, फणामणी मण्डिताय कमठ विध्वंसनाय सर्वोउपद्रव शान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

सर्वग्रह शान्ति मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रों ह्रः असि आउसा सर्वशान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

(सूर्योदय के समय पूर्व दिशा में मुख करके प्रतिदिन १०८ बार शुद्धभाव से जपें)

मनोरथ सिद्धिदायक मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः।

रोगनाशक मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्री कलिकुण्डदण्डस्वामिने नमः।
आरोग्य - परमैश्वर्य कुरु कुरु स्वाहा।

(यह मन्त्र श्री पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा के सामने शुद्धभाव और क्रिया पूर्वक १०८ बार जपना चाहिये)

मंगलदायक मन्त्र

ॐ ह्रीं हीं वरे सुवरे असिआउसा नमः ।

(एकान्त में प्रतिदिन १०८ बार धूप के साथ शुद्धभाव से जपें)

सर्वसिद्धिदायक मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं श्री अर्हं श्री वृषभनाथ - तीर्थंकराय नमः।

(समस्त कार्यों की सिद्धि के लिये प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक १०८ बार जपना चाहिये)

सर्वग्रह शान्ति मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रों ह्रः असिआउसा सर्व-शान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

(प्रातःकाल जप करें)

रोग निवारक मन्त्र

ॐ ह्रीं सकल-रोगहराय, श्री सन्मति देवाय नमः।

महासुखप्राप्ति कारक मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं णमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं श्री णमो सिद्धाणं,
ॐ ह्रीं श्री णमो आयरियाणं, ॐ ह्रीं श्री णमो लोए सव्वसाहूणं,
ॐ ह्रीं श्री णमो दंसणमस्य, ॐ ह्रीं णमो चरितस्य, ॐ ह्रीं श्री णमो तवस्य।

शान्ति कारक मन्त्र

ॐ ह्रीं परमशान्ति विधायक श्री शान्तिनाथाय नमः (अथवा)
ॐ ह्रीं श्री अनंतानंत परम सिद्धेभ्यों नमः।

ओम का जाप

'ॐ' नवकार मन्त्र के पाँच पद का वाचक है।

हृदय जप में बताये गये सफेद, लाल आदि पाँचों रंगों की पंखुड़ियों पर ओम् का क्रमशः ध्यान करना चाहिये।

ॐ अ-सि-आ-उ-सा के मन्त्र में भी 'ओम्' रहा हुआ है।

अतः नाभि कमल मे अ, मस्तक कमल में सि, मुखकमल में आ, हृदय कमल में उ, और कंठकमल में सा अक्षर का ध्यान करने से सब प्रकार से आनन्द रहता है।

नवग्रह शान्ति के लिये मंत्र जाप

1. सुर्य	-	ॐ णमो सिद्धाणं।
2. चन्द्र	-	ॐ णमो अरिहंताणं।
3. मंगल	-	ॐ णमो सिद्धाणं।
4. बुध	-	ॐ णमो उवज्झायाणं।
5. बृहस्पति	-	ॐ णमो आइरियाणं।
6. शुक्र	-	ॐ णमो अरिहंताणं।
7. शनि	-	ॐ णमो लोए सव्व साहुणं।
8. केतु	-	ॐ णमो सिद्धाणं।
9. केतु-राहू	-	ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आइरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्व साहूणं।

मंत्र व्याख्या

मंत्र मुह से बोला हुआ वो शब्द है जो चमत्कार पैदा करता है। यह तीन प्रकार के होते हैं:-

1. पुरुष मंत्र - नमोकार मंत्र देवों का मंत्र है यह पुरूष मंत्र है इसे किसी भी समय सुख दुख शुद्ध अशुद्ध अवस्था में बोला जा सकता है। इस मंत्र के जाप से सारी सिद्धियां प्राप्त होती है व कष्टों का नाश होता है।

2. स्त्री मंत्र - जिस मंत्र के आखिर में स्वाहा बोला जाता है वह स्त्री मंत्र होता है। इसे बोलने से पहले मन वचन काय (नहाकर धुले हुए वस्त्र धारण करना) कि शुद्धि आवश्यक है तथा इसे इष्ट आवाहन करके तत्पश्चात अग्नि में समर्पित करते वक्त धूप डालते हुए बोलना चाहिए। इसका कारण यह है कि अग्नि देवता कि स्त्री का नाम स्वाह है इसीलिए आवाहन सम्पूर्ण तभी होता है जब स्वाहा अग्नि में समर्पित हो।

3. नपुंसक मंत्र - जिस मंत्र के आखिर में नमो नमो बोला जाता है वह नपुंसक मंत्र होता है उसे हाथ में माला से जाप द्वारा किसी स्थान पर शुद्ध भाव से किया जा सकता है।